पंडित मदनमोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

सरिता चौधरी *
सुमित गंगवार **

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय शिक्षा के विकास एवं गुणात्मक संवर्धन हेतु भारत सरकार ने समय-समय पर विभिन्न नीतियों का निर्माण किया। स्वतंत्र भारत की सबसे पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण वर्ष 1968 में किया गया। इस नीति में शिक्षा में गुणवत्ता के समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कई ठोस कदम उठाए गए। वर्ष 1986 में पुन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, तत्पश्चात् 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझावों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया। वर्ष 2020 में, भारत सरकार द्वारा एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रस्तुत किया गया। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र मानते हुए शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय मूल्यों, विश्वासों, मानकों, विचारों तथा आदर्शों को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए व्यापक परिवर्तन करने के सुझावों को प्रस्तुत किया गया। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता प्रखर राष्ट्रवादी, महान दार्शनिक तथा उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों एवं कार्यों में दृष्टिगोचर होती है। इस लेख में मालवीय जी के शैक्षिक विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए सुझावों के दृष्टिकोण से अन्वेषित किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप यह पाया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न अध्यायों में वर्णित शिक्षा संबंधी सुझाव मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन तथा शैक्षिक सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करते हैं।

भारतवर्ष में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया है और इन महान विभूतियों ने अपने सामाजिक कृतित्व के माध्यम से अज्ञानता के अंधकार से भरे समाज को समय-समय पर न केवल ज्ञान रूपी प्रकाश से एक नई दिशा प्रदान की वरन् समाज के पुनर्निर्माण में महती भूमिका भी निभाई है (मिश्र, 2012 तथा लाल, 2013)। इन महान विभूतियों के द्वारा विरचित ज्ञान, इनके चरित्र और आचरण तथा इनके द्वारा स्थापित आदर्शों एवं मूल्यों ने समय-समय पर मानवीय सभ्यता को श्रेष्ठता की पराकाष्ठा तक पहुँचाने के लिए नूतन मार्ग भी प्रशस्त किया है। प्रगतिशील समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है (लाल तथा शर्मा, 2013)। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरबिंद, रामकृष्ण परमहंस, गिजूभाई बधेका तथा स्वामी विवेकानंद जैसे महान दार्शनिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने अपने दार्शनिक विचारों से शिक्षा की ज्योति को और अधिक प्रफुल्लित किया है। इन्हीं महान विभूतियों में महान दार्शनिक

* *अतिथि अध्यापक*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442005
** *रिसर्च एसोसिएट*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442005

एवं समाजसेवी तथा शिक्षा के अग्रदूत मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रहा है (शर्मा, 2016)। मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को प्रयाग में पंडित ब्रजनाथ तथा मूनादेवी के यहाँ हुआ था। मालवीय जी अपने सात भाई-बहनों में से पाँचवें पुत्र थे। मध्य प्रदेश के मालवा प्रान्त से प्रयाग आकर बसे उनके श्रीगोड ब्राह्मण पूर्वज मालवीय कहलाते थे। जिसके कारण इन्होंने भी यही उपनाम धारण कर लिया (बक्शी, 1991; बोनानी, 2014; चंद तथा मिश्र, 2015)। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आई शिक्षा नीतियों जिनमें 1968, 1986, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 शामिल हैं, में भारतीय शिक्षा में सुधार हेतु अनेक सुझाव प्रस्तुत किए गए (लाल और शर्मा, 2013)। लेकिन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विषय-वस्तु के अवलोकन से ज्ञात होता है कि यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा के भारतीय मानकों, मूल्यों, विचारों, आदर्शों, आवश्यकताओं तथा व्यवहारों के एक समेकित प्रतिमान को आत्मसात किए हुए है। भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त प्रतिमान को स्वीकारने के प्रबल समर्थक पंडित मदन मोहन मालवीय जी रहे हैं (पाण्डेय और शर्मा, 2015)।

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा आधुनिक तकनीकी के विकास का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है (रामगोपाल, 2018)। आज हम भारतीयों के समक्ष एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है, जो ऐसे सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की नींव रखती है, जिसमें भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) शामिल है, के संयोजन में शिक्षा के सभी पक्षों के सुधार एवं पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध है। यह शिक्षा नीति प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक विचारकों तथा शिक्षाशास्त्रियों के स्वप्न को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करती है। ऐसे ही महान आदर्शवादी विचारक और शिक्षाशास्त्री पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की चर्चा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है, जिन्होंने एक ऐसे आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संजोते हुए वैश्विक स्तर पर आधुनिक विज्ञान और तकनीकी की दृष्टि से अग्रणी हो।

मालवीय जी के अनिवार्य तथा नि:शुल्क शिक्षा संबंधी विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी के अनुसार प्रारंभिक विद्यालयों में सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रवाधान होना चाहिए (ज्योति, 2014)। उनका कहना था कि "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो वह सब प्रकार के यत्न करो कि देश में कोई भी बालक या बालिका निरक्षर न रहे।" इसी दिशा में कदम बढ़ाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने अध्याय 2 में, विद्यालयी शिक्षा को संबोधित करते हुए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्व शर्त मानती है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करना शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी जिसमें 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और

संख्या ज्ञान का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु 3.1 में सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित किया गया है, जिसमें ड्रॉप आउट हुए बच्चों को पुनः शिक्षा प्रणाली में शीघ्र वापसी को प्राथमिकता दी जाएगी।

मालवीय जी के सर्वांगीण विकास संबंधी विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करना है (चौधरी, 2014)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 1 में शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्यों को चिह्नित कर 5+3+3+4 पर आधारित एक ऐसी नई शिक्षा व्यवस्था के पुनर्गठन की बात कही गई है जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) को सीखने की नींव के रूप में देखा गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, खेल आधारित, गतिविधि आधारित शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, नैतिकता, शिष्टाचार, सहयोग तथा व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसका समग्र उद्देश्य बच्चों के भौतिक-शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ संवाद हेतु प्रारंभिक भाषा तथा साक्षरता का विकास करना है।

शारीरिक विकास के संबंध में मालवीय जी का मानना था कि दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति सबल राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते। 'मेरा बचपन' नामक लेख में मालवीय जी ने आहार, शयन और ब्रह्मचर्य को स्वास्थ्य के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्वीकार किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रथम बिंदु 1.6 तथा बिंदु 2.9 में, बच्चों के आहार, पोषण और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। जिसमें मध्याह्न भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ-साथ तैयारी कक्षाओं तक भी विस्तारित करने की योजना है। पौष्टिक भोजन के साथ-साथ नियमित स्वास्थ्य जाँच, 100 प्रतिशत टीकाकरण के लिए नियमित स्वास्थ्य जाँच तथा इसकी निगरानी के लिए हेल्थ कार्ड जारी करने की महत्वपूर्ण योजनाएँ भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सम्मिलित हैं।

मालवीय जी के पाठ्यक्रम संबंधी विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी ने यह महसूस किया कि संकुचित पाठ्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय उद्देश्यों को कदापि प्राप्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाज और देश अपनी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। अतः उन्होंने लचीले पाठ्यक्रम को अपनाया तथा देश के विकास हेतु आधुनिक विज्ञान की शिक्षा पर ज़ोर दिया। इसके अतिरिक्त मालवीय जी ने कहा कि पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो तथा वह भविष्य में आत्मनिर्भर भी बन सके (प्रसाद तथा गुप्ता, 2013)। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियाँ मालवीय जी के शैक्षिक विचारों का गहराई से समर्थन करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं के अनुसार 5+3+3+4 पाठ्यक्रम तैयार किया

© NCERT not to be republished

गया है। यह पाठ्यक्रम लचीला होने के साथ-साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास को समावेशित किए हुए है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गतिविधि आधारित ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम, कुछ हद तक औपचारिक फ़ाउंडेशन पाठ्यक्रम, अनुभव आधारित और अमूर्त अवधारणाओं पर आधारित मिडिल स्टेज पाठ्यक्रम तथा चार साल का बहुविषयक उच्चतर माध्यमिक अध्ययन तथा विषय के चुनाव के लचीलेपन की योजना एक ऐसे मनोवैज्ञानिक पदानुक्रम को प्रदर्शित करती है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और 21वीं शताब्दी के कौशल से सुसज्जित करना सुनिश्चित होगा।

पाठ्यक्रम के संदर्भ में मालवीय जी ने बुनाई, रंगाई, धुलाई, धातु कर्म, काष्ठकला, मीनाकारी आदि की शिक्षा पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु 4.26 में इस संदर्भ में मिडिल स्तर पर एक ऐसे लचीले पाठ्यक्रम को शामिल करने की बात कही गई है जिसके अंतर्गत महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जैसे— बढ़ईगिरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि काम अपने हाथों से करने का अनुभव प्रदान किया जाएगा। इसमें आगे कक्षा 6 से 8वीं कक्षा में पढ़ने के दौरान सभी विद्यार्थी 10 दिन के बस्ता रहित पीरियड में स्थानीय व्यावसायिक विशेषज्ञों, जैसे— बढ़ई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। इसके साथ-साथ मालवीय जी ने चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, नक्षत्र विज्ञान, भाषा आदि सभी की शिक्षा पर बल दिया, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें। वे एक ऐसा संवर्धित पाठ्यक्रम चाहते थे जिसमें प्राचीन भारतीय आयुर्वेद के साथ आधुनिक शल्यशास्त्र का मेल, आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण, विभिन्न विषयों पर प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, दर्शनशास्त्र, वेद-वेदांग तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त इंजीनियरिंग, कृषि विज्ञान, धातु विज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन सम्मिलित हो (सिंह, 2017)।

मालवीय जी के ललित कलाओं संबंधी शैक्षिक विचार तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी चाहते थे कि विद्यालय में संगीत, काव्य, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि ललित कलाओं की शिक्षा का भी प्रबंध हो। उनके विचार में कला विहीन जीवन शुष्क और नीरस होता है (चौधरी, 2014)। मालवीय जी के उक्त विचारों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिंदु 4.7 तथा 4.8 में अपना स्थान सुनिश्चित किया है, जिसमें विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों में प्रायोगिक आधारित अधिगम की बात कही गई है, जो कला समन्वय तथा खेल समन्वय जैसी क्रॉस करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण को परिलक्षित करता है। इसमें विविध विषयों की अवधारणाओं को अधिगम आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों द्वारा समझा जाता है, जहाँ एक ओर कला समन्वित शिक्षण बच्चों को भारतीय कला और संस्कृति से अवगत कराएगा वहीं दूसरी ओर खेल समन्वय शिक्षण बच्चों के स्वास्थ्य के साथ-साथ संबंधित जीवन कौशल को प्राप्त करने में सहयोग भी प्रदान करेगा।

© NCERT not to be republished

मालवीय जी के भारतीय ज्ञान धरोहर संबंधित विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय शिक्षा से संबंधित उनके सपनों एवं उद्देश्यों को साकार रूप प्रदान करता है। शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने में कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ समाहित किए हुए है। इस विश्वविद्यालय में न केवल अंग्रेज़ी साहित्य, आधुनिक मानविकी, समाज विज्ञान और विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन शामिल है, अपितु हिंदू धर्म एवं विज्ञान, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के साथ-साथ विभिन्न प्राच्य विद्याओं का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है, जो कि इस संस्थान की एक अनूठी विशेषता है (सिंह, 2017)। यहाँ दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों को कांट और हीगल के साथ-साथ अनिवार्यतः कपिल और शंकर के सिद्धांतों का भी अध्ययन करना होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मालवीय जी की भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शन के प्रति प्रेमदृष्टि को व्यापक रूप से साकार रूप देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बिंदु 4.27 में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि 'भारत का ज्ञान' में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं तथा चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा। इसके अंतर्गत पूरे विद्यालयी पाठ्यक्रम में ही भारतीय ज्ञान प्रणाली, विशेष रूप से आदिवासी ज्ञान एवं सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों को समावेशित करते हुए गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, प्रौद्योगिकी, भाषा विज्ञान सहित राजव्यवस्था संरक्षण आदि विषयों को शामिल किया जाएगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम भी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षार्थियों के लिए विकल्प के रूप में उपलब्ध होगा, जो निश्चय ही प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा को और अधिक समृद्ध कर भारत को वैश्विक स्तर पर मज़बूत बनाएगा।

मालवीय जी के उच्च शिक्षा संबंधी विचार तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

मालवीय जी द्वारा उच्च शिक्षा कौशल के लिए निर्धारित किए गए विशेष उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. सांस्कृतिक उद्देश्य;
2. भारतीय कला कौशल का पुनरुत्थान करना; और
3. कला और विज्ञान में शोध कार्यों को प्रोत्साहन देना।

मालवीय जी विश्वविद्यालयों में अन्वेषण और प्रयोगात्मक कार्य पर आधारित विज्ञान और कौशल की शिक्षा के पक्षधर थे, जिसमें तकनीकी ज्ञान का ऐसा समावेशन हो जिससे देश की बेकारी और औद्योगिक अवनति को दूर किया जा सके (प्रसाद और गुप्ता, 2013)। मालवीय जी विश्वविद्यालयी शिक्षा में कृषि शिक्षा, संगीत एवं ललित कलाओं की शिक्षा, चरित्र निर्माण की शिक्षा सहित ऐसी शैक्षिक व्यवस्था को स्थापित करना चाहते थे जो भारतीय परंपरा से संबद्ध होते हुए राष्ट्र को वैश्विक पटल पर एक उत्पादक, प्रगतिशील, सुसंस्कृत एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में प्रतिबिंबित कर सके (सिंह और सिंह, 2012 एवं सिंह, 2019)। राष्ट्रीय शिक्षा

© NCERT not to be republished

नीति 2020 के अध्याय 9 में मालवीय जी के उच्च शिक्षा संबंधी विचारों का प्रभावपूर्ण समावेशन किया गया है। बिंदु 9.1.1 में गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को सम्मिलित कर 21वीं सदी में मानवीय क्षमताओं को विकसित करने पर बल दिया गया है तथा साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता, सेवा-भावना जैसे गुणों के विकास को भी रेखांकित किया गया है, जो मालवीय जी के व्यक्तित्व के समग्र विकास तथा राष्ट्रीय भावना विकास संबंधी उद्देश्यों से प्रेरित है।

मालवीय जी के 'लचीलेपन पाठ्यक्रम' को संबोधित करते हुए यह शिक्षा नीति (बिंदु 10.2) उच्चतर शिक्षा के ढाँचे के बारे में सबसे बड़ी अनुशंसा बड़े एवं बहुविषयक विश्वविद्यालयों और उच्चतर शिक्षा संस्थान, संकुलों के संबंध में करती है, जिससे भारत बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्तियों का निर्माण कर अपनी प्राचीन विश्वविद्यालयी (तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, कांची, नदिया, उदयन्तपुरी अथवा ओदंतपुरी या उदन्तपुरी और विक्रमशिला) परंपरा को वापस लाकर एक शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अखंड और सशक्त भारत बनने में समर्थ होगा। यह बिंदु मालवीय जी की भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान तथा शिक्षा में परंपरागत और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समन्वय की दृष्टि को साकार रूप में परिणत करता है।

मालवीय जी के विज्ञान तथा तकनीकी संबंधी विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इनका समावेशन

विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा के संबंध में मालवीय जी जापानी, फ्रेंच तथा डेनिश भाषा के तकनीकी ज्ञान से अत्यंत प्रभावित थे तथा उसी तर्ज़ पर भारतीय विज्ञान और तकनीकी शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन चाहते थे (ज्योति, 2014)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मालवीय जी के तकनीकी संबंधी विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है एवं अध्याय 23 तथा 24 में तकनीकी के उपयोग तथा एकीकरण पर विस्तार से चर्चा करती है। इसमें ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, आभासी प्रयोगशालाएँ, डिजिटल रिपोज़िटरी, मिश्रित अधिगम प्रतिमान जैसे तकनीकी नवाचारों की अनुशंसा कर विद्यालयी तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा प्रणाली को एक विकासात्मक गति प्रदान की गई है।

उपसंहार

अंत में यह कहा जा सकता है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पंडित मदन मोहन मालवीय के संपूर्ण शैक्षिक विचारों को अपने आप में समेटे हुए है। यह शिक्षा नीति उनके जीवन दर्शन तथा शैक्षिक दर्शन का यथार्थ रूप में साक्षात्कार कराती है जो निश्चय ही भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करते हुए वैश्विक पटल पर उच्च शैक्षिक प्रतिमान स्थापित करने का बल देती है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

चंद, आर. और बी. के. मिश्र. 2015. मदन मोहन मालवीय विजन ऑन एग्रीकल्चर एजुकेशन एंड रिसर्च. *करंट साइंस.* 108(6).

चौधरी, जी. 2014. मैनेजमेंट ऑफ़ वैल्यू बेस्ड एजुकेशन एंड स्पीरिचुअलिटी—ए प्रेक्टिकल एप्लीकेशन बाई महामना मालवीय जी इन बी.एच.यू. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंग्लिश, लैंग्वेज, लिटरेचर एंड ह्यूमेनिटीज़.*1(4).

ज्योति. 2014. मदन मोहन मालवीय एंड हिज़ विज़िन टुवर्ड्स एजुकेशन— ए स्टडी. *ग्लोबस जर्नल ऑफ़ प्रोग्रेसिव एजुकेशन.* 4(1).

पाण्डेय, बी. एम. और डी. के. शर्मा. 2015. *भारत रत्न महामना.* वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

प्रसाद, एम. और जी. एस. गुप्ता. 2013. द कंट्रीब्यूशन ऑफ़ पंडित मदन मोहन मालवीय फ़ॉर हायर एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड एप्लाइड रिसर्च.* 3(1).

बक्शी, एस. आर. 1991. *मदन मोहन मालवीय — द मैन एंड हिज़ आइडियोलॉजी.* अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

बोनानी, वाई. 2014. मेन कंट्रीब्यूशन ऑफ़ पंडित मदन मोहन मालवीय इन इम्प्रूविंग द एजुकेशन सिस्टम इन अंडोरा. *कलेक्शन जार्ज अल वर्ज लेरस.* 1(1).

मिश्र, एस. के. 2012. *भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास.* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

रामगोपाल, एम. 2018. भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय हाई-प्रिस्ट ऑफ़ इंडियन नेशनलिज्म (1861–1946 ए. डी.). *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स.* 1(6).

लाल, आर. बी. 2013. *शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार.* रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.

लाल, आर. बी. और के. के. शर्मा. 2013. *भारत में शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ.* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, एस. के. 2016. महामना मालवीय जी एंड हायर एजुकेशन इन इंडिया. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज़ एंड ह्यूमेनिटीज़.* 1(1).

सिंह, ए. 2019. महामना पंडित मदन मोहन मालवीय— हरविंगर ऑफ़ हायर एजुकेशन. *इंडियन जर्नल ऑफ़ सोसाइटी एंड पॉलिटिक्स.* 6(1).

सिंह, पी. और एस. सिंह. 2012. मालवीय एज़ ए ग्रेट विजनरी फ़ॉर हायर एजुकेशन — सेलिब्रेटिंग हिज़ 150 बर्थडे. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफ़िक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस.* 2(3).

सिंह, एस. 2017. एजुकेशनल थॉट्स ऑफ़ मालवीय एंड टैगोर—ए क्रिटिकल एनालिसिस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़, आर्ट्स, मेडिसिन एंड साइंस.* 5(1).

© NCERT not to be republished